Impact Factor 7.265

Journal of Research and Development

December-2021 Volume-12 Issue-26

Dr. R. V. Bhole
'Ravichandram' Survey No-101/1, Plot No-23, Mundada Nagar, Jalgaon (M.S.) 425102

Mr. Shashikant Jadhawar
I/C, Principal,
Chhatrapati Shivaji Mahavidyalaya,
Kalamb, Dist. Osmanabad (MS) India

Executive Editor
Dr. Anant Narwade
Dr. Raghunath Ghadge
Mr. Anil Jagtap

Scanned by CamScanner

'Journal of Research & Development' A Multidisciplinary International Level Refereed and Peer Reviewed Journal.
Impact Factor-7.265, ISSN: 2230-9578, December 2021 Volume-12, Issue-26
Mahatma Phule, Rajarshi Shahu Maharaj and Dr. B. R. Ambedkar - Thoughts and works

सामाजिक क्रान्ति के प्रणेता महात्मा ज्योतिराव फूले

प्रो. डॉ. गायकवाड मुकुन्द
प्रोफेसर एवं हिंदी विभागाध्यक्ष शि.म.ज्ञानदेव मोहेकर महाविद्यालय कळंब तहसिल जि. उस्मानाबाद
पिनकोड–४१३५०७

ज्योतिराव फूले का जन्म ११ अप्रैल १८२७ को पूना शहर में हुआ था। महाराष्ट्र के लोग बडे होने पर ज्योतिराव फूले को आदर, श्रध्दा, सम्मान व स्नेह से ज्योतिबा नाम से पुकारने लगे। कोल्हापुर के पास एक पहाडी पर महाराष्ट्र के बहुजन समाज के देवता ज्योतिबा का मंदिर है। मराठों के कई घरानों में ज्योत कुल देवता का नाम है। महात्मा फूले के जन्म दिवस पर इस देवता का उत्सव था इसलिए उनका नाम ज्योतिराव रखा था।

ज्योतिराव की अवस्था जब नौ माह की थी, तब माता चिमणाबाई का देहांत हो गया। गोविंदराव की पत्नी चिमणाबाई का जब देहांत हुआ तब मित्रों ने दूसरे विवाह की सलाह दी। लेकिन इन्होंने दूसरा विवाह यह सोचकर नहीं किया की सौतेली माँ उनके बच्चों को सगी माँ जैसा प्यार और ममता नहीं दे पायेगी। इसलिए राजाराम एवम् ज्योतिराव के पालन पोषण के लिए ज्योतिराव की मौसेरी विधवा बहन श्रीमती सगुणाबाई के छत्रछाया में रखा। सगुणाबाई ने उनका पालन–पोषण ही नहीं किया वरन उन्हें सही आर्थों में इन्सान बनाया था।

ज्योतिराव गोविंदराव फूले का नामोच्चार साथ एक विचार मन में आता है। ज्योतिराव ने शुद्रादि शुद को धर्म के नाम पर जो शोषण होता था इसका जिक्र बहुत ही लगनता के साथ किया था। इतना ही नहीं ईश्वर और धर्म के नाम पर संस्कृति के नाम पर चलनेवाला महिलाओं का शोषण, उनका शारीरिक और मानसिक शोषण, उनपर लदा हुआ पुरूषों का दास्यत्व इनका दटकर विरोध किया। संस्कृति के नामपर चली जानेवाली हिंदू महिलाओं की खामोशी पहले महाराष्ट्र में ज्योतिराव ने ही सुनी थी। पाठशाला छोडने के बाद ज्योतिराव के हाथों में हल–फाल, खुरपी जैसे खेती के उपकरण आ गये। अपने पिता के साथ खेत तथा बगीचे में वह परिश्रम व लगनता से काम करने लगे। इतना होने के बाद भी उनका किताबों का लगाव कम नहीं हुआ। खेती के काम के बाद बचे समय में तथा रात्रि में दीपक की रोशनी में वह पढाई करते थे। पास–पडोस के बुजुर्गों से विविध विषयों पर चर्चा करते थे। इनकी सूक्ष्म और तर्कपूर्ण बुध्दि ने पडोसियों को अधिक प्रभावित किया। उर्दू–फारसी के जानकार गफ्फार बेग मुंशी तथा ख्रिस्ती धर्मोपदेशक लिजीट साहब इनके प्रतिभा से चकित थे।

गोविन्दराव ने तेरह वर्ष की आयु में १८४० में उनका विवाह कर दिया। उस समय बाल्यावस्था में ही विवाह करने का प्रचलन था। इनकी पत्नी धाय माँ सगुणाबाई के दूर के रिश्ते में मामा खण्डूजी पाटील की पुत्री सावित्रीबाई थीं। इनका जन्म १८३१ में सातारा जिले के नायगाँव में हुआ था। इस सावित्रीबाई ने आजीवन ज्योतिराव का साथ दिया। इनके चलाये गये समाज–सुधार अभियान में सहयोग तथा सम्मुख आनेवाली विभिन्न समस्याओं से इस दम्पति ने संघर्ष किया और अपने क्रांति–पथ पर निर्भीकता से बढते रहे। जब ज्योतिराव के पडोसियों ने इनकी प्रशंसा की तथा उन्हें आगे और पढने के लिए प्रोत्साहित किया लगभग १४ वर्ष की आयु के ज्योतिराव को पूना के बुधवार पेठ बाडा स्थित स्कॉटिश मिशन की सरकारी पाठशाला में प्रवेश दिलवा दिया। स्कूल परिवार में सदाशिव गोवन्डे से इनकी लम्बी दोस्ती हो गई। साथ ही विभिन्न जातियों के बहुत से बच्चे इनके मित्र बन गये।

मिशन स्कूल में हिन्दू, मुसलमान तथा ईसाई आदि सभी धर्मों के छात्र पढते थे। ज्योतिराव की सबसे मित्रता हो गई थी। इनके रहन–सहन, धर्म तथा आचार–विचार से इनका परिचय हुआ। समाज में व्याप्त विषमता में सुधार लाने की भावना वहीं से उनके मन में जागृत हो गई थी। रामोशी, कोली आदि पहाडी जन जातियों में अंग्रेजी शासन के विरूध्द वातावरण बन रहा था। श्री उमाजी नाईक ने १८२६ में विद्रोह का झण्डा लहराया, बापू जी मगरे एवं राधोजी मगरे ने १८४८ में ब्रिटिश सत्ता के विरूध्द विद्रोह किया, लेकिन सभी अभियान असफल रहे। अंग्रेजो ने निर्दयतापूर्वक इनके विद्रोह को दबा दिया। इस घटना का इनपर बहुत प्रभाव पडा। ज्योतिराव की नजर में गुलामी घृणास्पद थी। इसलिए विदेशी शासन के विरूध्द झण्डा उठाने वालों से ज्योतिराव एवं उनके मित्रों को स्वतंत्रता प्राप्ति की प्रेरणा मिली। ज्योतिराव के ब्राह्मण मित्र सखाराम ने उन्हे अपने विवाह का निमंत्रण दिया। इसलिए ज्योतिराव उसकी बारात में चले गये। कुछ देर बाद अपने ब्राह्मणत्व पर घमण्ड करनेवाले दकियानुसी ब्राह्मणों ने उन्हें अपने साथ चलते देखा। एक क्रोध भरे ब्राह्मण ने कहा –"क्यों रे शुद लडके, तू हमारे साथ कैसे आ

Scanned by CamScanner